विपश्यना

साधकों का
मासिक प्रेरणा पत्र

वार्षिक शुल्क रु. 30/-
आजीवन शुल्क रु. 500/-

बुद्धवर्ष 2557, कार्तिकपूर्णिमा, 17 नवंबर, 2013 वर्ष 43 अंक 5

For Patrika in various languages, visit: http://www.vridhamma.org/Newsletter_Home.aspx

धम्मवाणी

वयधम्मा सङ्खारा, अप्पमादेन सम्पादेथ।

-- दीघनिकाय, महापरिनिब्बानसुत्तं- १८५.

(महापरिनिर्वाण के पूर्व कहे गये भगवान बुद्ध के अंतिम बोल।)

-- सारे संस्कार व्ययधर्मा हैं। जो कुछ संस्कृत यानी निर्मित होता है वह नष्ट होता ही है। (विपश्यना साधना द्वारा) प्रमाद-रहित रह कर (अपने भीतर) इस सच्चाई को स्वानुभूति पर उतारो।

आंतरिक शांति के धर्मदूत : श्री सत्यनारायण गोयन्का

अगस्त २००० के अंत में एक लंबे दिन के अपराह्न का समय था। न्यूयार्क के संयुक्तराष्ट्र के मुख्य सभा भवन में सहस्राब्दि विश्व शांति शिखर सम्मेलन के प्रतिनिधि श्रांत एवं क्लांत होकर बैठे थे। यह संयुक्तराष्ट्र में धार्मिक तथा आध्यात्मिक नेताओं का प्रथम विश्व सम्मेलन था और यहां बात-चीत करते-करते लोग कटुता पर उतर आये थे। कोई सहमति नहीं बन पायी थी। प्रतिनिधिगण धर्मांतरण के प्रश्न पर एक दूसरे का कड़ा प्रतिरोध कर रहे थे। कुछ प्रतिनिधि तो इस प्रथा के बिल्कुल विरुद्ध थे और अन्य प्रतिनिधियों ने, जो बड़े (समुदाय के) धर्मों का प्रतिनिधित्व कर रहे थे, इस विचार को अस्वीकार कर दिया था। राजनेताओं के बीच भी वर्षों से इसी तरह का विचार-विमर्श चलता रहा था। आज आध्यात्मिक नेता भी उन लोगों से कुछ अधिक नहीं कर पाये थे।

सत्र के अंत में एक कम जाना-पहचाना व्यक्ति मंच पर बुलाया गया। वे मंच पर एक सहायक के सहारे गये। उनके चांदी के से उजले बाल चमक रहे थे और उन्होंने भारत में सिला हुआ एक सुंदर सूट पहन रखा था। उन्होंने सावधानीपूर्वक सब को सम्मान देते हुए बड़ी भीड़ को मुस्कराते हुए देखा और बोलना आरंभ किया और कुछ ही क्षणों में जितने भी गण्यमान्य लोग वहां उपस्थित थे उन सब का ध्यान अपनी ओर खींच लिया, जब कहा--

''धर्म तभी धर्म है जब वह लोगों को जोड़े। जब लोगों को जोड़े नहीं, वरन विभाजन करे तब वह धर्म नहीं है। धर्म मनुष्यों को तोड़ता नहीं, बल्कि जोड़ता है।''

तालियों की गड़गड़ाहट के साथ इन शब्दों के वक्ता का जोरदार स्वागत किया गया। ये बातें उन बातों की तरह नहीं थीं, जिन्हें लोग दिन भर बोल और सुन रहे थे। ये बातें कुछ भिन्न थीं, अतः प्रतिनिधियों ने इन्हें ध्यान से सुनना प्रारंभ किया।

वक्ता ने पुनः कहना आरंभ किया-- ''यहां धर्मांतरण के पक्ष और विपक्ष में बहुत बातें कहीं गयीं। मैं धर्मांतरण के पक्ष में हूं, विपक्ष में नहीं। परंतु धर्मांतरण एक संगठित धर्म से दूसरे संगठित धर्म में नहीं होना चाहिए। धर्मांतरण होना चाहिए दुख से सुख में, दासता से मुक्ति में, क्रूरता से करुणा में। आज के युग में ऐसे ही धर्मांतरण की आवश्यकता है।''

श्री सत्यनारायण गोयन्का, जनवरी ३०, १९२४ - सितंबर २९, २०१३

वक्ता के एक-एक शब्द पर तालियां बजती रहीं और उनका स्वागत किया जाता रहा।

अब वक्ता ने विषयवस्तु पर बड़े उत्साह से तथा जोर देकर कहना आरंभ किया। यदि मेरा मन अशांत है, क्रोध, घृणा, ईर्ष्या तथा वैमनस्य से भरा है तो मैं संसार को शांति कैसे दे सकता हूं? इसीलिए तो संसार के संतों ने, ऋषि-मुनियों ने कहा कि अपने आपको जानो। यह जानना केवल बौद्धिक स्तर पर न हो, भावनात्मक अथवा भक्ति के स्तर पर भी न हो, बल्कि यह वास्तविक स्तर पर हो, सच्चाई के स्तर पर हो। जब आप अनुभूति के स्तर पर अपने बारे में सत्य को जानेंगे तब बहुत सारी समस्याओं का समाधान हो जायगा। तब आप प्रकृति के सार्वभौम तथा विश्वजनीन नियम को (या ईश्वर को) जान सकेंगे, जो सब पर समानरूप से लागू होता है। जब मैं अपनी ओर देखता हूं और पाता हूं कि मैं क्रोध कर रहा हूं, ईर्ष्या कर रहा हूं, किसी से वैर कर रहा हूं तब समझता हूं कि जिस बात को मैं अपने अंदर जगा रहा हूं, उसका पहला शिकार मैं स्वयं

ही हूं। पहले मैं अपनी हानि करता हूं बाद में किसी दूसरे की हानि करता हूं। यदि मैं इन अकुशल धर्मों से मुक्त हो जाऊं तो प्रकृति या परमेश्वर मुझे तत्काल इनाम या पुरस्कार देने लगता है। मैं बड़ी शांति अनुभव करता हूं।

श्री गोयन्काजी अगस्त २००० में संयुक्तराष्ट्र संघ, न्यूयार्क के सहस्राब्दि विश्व शांति सम्मेलन को संबोधन करते हुए

''मैं अपने को हिंदू कहूं या मुस्लिम, क्रिश्चियन कहूं या जैन, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। मनुष्य तो मनुष्य है। मनुष्य का मन तो मनुष्य का मन है। इसलिए धर्मांतरण होना चाहिए लेकिन मन के स्वभाव का। मन की अशुद्धता से मन की शुद्धता में। यही वास्तविक धर्मांतरण है जो अति आवश्यक है। और कुछ नहीं।''

घंटी बज चुकी थी। यह इस बात का संकेत था कि वक्ता का समय समाप्त हो गया है। परंतु उन्होंने अपने देश के एक सम्राट का संदेश देने के लिए समय मांगा। उद्धरण देकर और एक-एक शब्द का अर्थ बताते हुए वक्ता ने कहा--

''हर धर्म प्रेम, करुणा और सद्भाव की बात करता है। ये बातें सभी धर्मों की नींव हैं। बाहरी छिलके भिन्न-भिन्न हैं। सार को महत्त्व दो तो झगड़ा होगा ही नहीं। किसी धर्म की निंदा न करो। हर धर्म के सार को महत्त्व दो तभी सच्ची शांति और सामंजस्य स्थापित होगा।''

यहां जिस शासक का उल्लेख किया गया है वह भारत का महान सम्राट अशोक था, जिसने यह संदेश दिया था। धार्मिक सहिष्णुता के लिए यह उसका संसार में प्रथम आह्वान था जो २००० वर्ष पूर्व किया गया था। और आज इस संदेश को देने वाले दूत थे श्री सत्यनारायण गोयन्का, जिन्होंने अशोक को महानायक के रूप में देखा। इन्होंने अपना सारा जीवन आंतरिक शांति प्राप्त करने की विधि सिखाने में बिता दिया।

प्रारंभिक जीवन

ऐसा संदेश देने वाले श्री गोयन्काजी का जन्म १९२४ में मांडले में हुआ, जो उस समय म्यंमा की राजधानी हुआ करता था। इनके जन्म के ५० से कुछ कम वर्ष पहले राजा थिबाव को ब्रिटिश सरकार ने गद्दी से हटा कर, देश से निर्वासित कर दिया था। इसके शीघ्र बाद इस देश में बड़ी संख्या में भारत के अनेक लोग अपनी रोजी-रोटी की खोज में म्यंमा आये। उनमें से एक अठारह वर्षीय नवयुवक श्री बसेसरलाल गोयन्का भी थे जो इनके पितामह (बाबा) थे। अधिकांश आप्रवासियों की तरह वे भी यहां धन कमाने आये थे। वे एक अच्छे, मेहनती, ईमानदार और आध्यात्मिक प्रवृत्ति के व्यक्ति थे। यद्यपि वे हिंदू थे, लेकिन शीघ्र ही उन्होंने म्यंमा के लोगों तथा उनकी परंपराओं के प्रति गहरी आत्मीयता विकसित कर ली।

श्री बसेसरलालजी के मन में म्यंमा के लोगों के प्रति जो आदरभाव था वही भाव उन्होंने अपने पोते में पैदा किया। श्री गोयन्काजी के अनुसार जब वे छोटे थे तब उनके बाबा उन्हें वहां के प्रसिद्ध महाम्या मुनि पगोडा ले जाया करते थे, जो मांडले शहर के परिसर में था। वहां वे आंखें मूंद कर बैठते और चुपचाप ध्यान करते। इस बीच बच्चा वहां शांति एवं धैर्यपूर्वक प्रतीक्षा करता और देखता रहता। वहां के गहन शांतिपूर्ण वातावरण का प्रभाव उस पर भी पड़ता रहता। इस प्रकार बच्चे में म्यंमा के प्रति आदर एवं सम्मान का जो भाव था वह अपनी मातृभूमि के प्रति गहरे प्रेम में बदलता चला गया और उसके दीर्घ जीवन में कभी कम नहीं हुआ।

बालक बड़ा हुआ और (रंगून में) स्कूली शिक्षा में आगे बढ़ता हुआ, हाईस्कूल की परीक्षा में पूरे म्यंमा में प्रथम आया। यद्यपि आगे पढ़ने की बात आकर्षक थी लेकिन आगे न पढ़ कर, ये अपने पारिवारिक कपड़े के व्यवसाय में लग गये। तब दूसरे विश्व युद्ध की विभीषिका आयी। जब १९४२ में जापानियों ने म्यंमा पर धावा किया तब गोयन्काजी अपने परिवार के एक बड़े समूह का नेतृत्व करते हुए पहाड़ और जंगल के रास्ते उन्हें भारत लाये। ये लोग उन हजारों लोगों से अधिक भाग्यशाली थे जो इस कठिन यात्रा में रास्ते में ही मर गये।

युद्ध के वर्षों को उन्होंने दक्षिण भारत में बिताया। यहां एक मित्र ने उन्हें नया व्यवसाय आरंभ करने में सहायता की। जापानियों की हार और म्यंमा से पुनः पीछे हटने के बाद ये लोग म्यंमा लौट गये। उस समय श्री गोयन्काजी की उम्र बीस से ऊपर थी। शीघ्र ही उन्होंने व्यापार में अपनी जन्मजात प्रवृत्ति दिखलायी और भारतीय समुदाय के वे नेता हो गये। लेकिन जैसा कि अक्सर कहते रहते थे, धन तथा समाज में ऊंचे स्थान प्राप्त कर भी उन्हें शांति नहीं मिली। बल्कि मानसिक तनाव बढ़ने लगा और ऐसा माइग्रेन (सिरदर्द) हो गया कि जब भी दर्द होता, उन्हें मोरफीन का ऊंचा डोज लेना पड़ता। गोयन्काजी जापान गये, यूरोप तथा अमेरिका गये। बड़े-बड़े डॉक्टरों की सलाह ली, लेकिन वे भी उन्हें माइग्रेन से मुक्त नहीं कर सके।

विपश्यना के बारे में जाना

तब उनके एक मित्र ने उन्हें उत्तरी यांगों (रंगून) में स्थित 'इंटरनेशनल मेडिटेशन सेंटर' जाने के लिए कहा, जिसकी स्थापना सयाजी ऊ बा खिन ने कुछ ही वर्षों पूर्व की थी। ऊ बा खिन का जन्म एक गरीब परिवार में हुआ था। लेकिन वे अपनी प्रतिभा के कारण म्यंमा सरकार के एक बड़े सरकारी अफसर हुए। वे अपनी सत्यनिष्ठा, ईमानदारी तथा प्रभावकारिता के लिए सुविख्यात और प्रसिद्ध थे। साथ ही अब

वे उस विपश्यना के एक गृहस्थ आचार्य थे, जो आत्मदर्शन की एक विधि है और जो म्यंमा में वस्तुतः प्राचीनकाल से बौद्ध भिक्षुओं की गुरु-शिष्य परंपरा द्वारा सुरक्षित रखी गयी है।

श्री गोयन्काजी ने मित्र की बात मान ली और ध्यान केंद्र पर जाकर वहां क्या सिखाया जाता है, उसे जानने की योजना बनायी। जब ये सयाजी ऊ बा खिन से मिलने पहुँचे तब सयाजी ने इन्हें देखते ही यह बात जान ली कि विपश्यना आचार्य के रूप में उनका जो मिशन है वह यही व्यक्ति पूरा कर सकता है।

इसके बावजूद सयाजी ने पहले दस दिवसीय शिविर में इन्हें बैठने की अनुमति नहीं दी, क्योंकि गोयन्काजी ने साफ-साफ कहा था कि वे माइग्रेन से मुक्त होना चाहते हैं। इस पर सयाजी ने कहा, "तुम इस विधि के मूल्य को घटा रहे हो, यह कह कर कि तुम एक शारीरिक रोग से मुक्त होना चाहते हो। यहां आओ तो मन को तनाव तथा दुःख से मुक्त करने आओ, शारीरिक रोग तो अपने आप चले जायँगे।"

अंतर्राष्ट्रीय साधना केंद्र, रंगून के पगोडा के सामने सयाजी ऊ बा खिन

गोयन्काजी मान गये परंतु फिर भी कुछ महीनों तक शिविर में नहीं गये। बड़ी हिचकिचाहट के बाद उन्होने सन १९५५ में पहला शिविर किया। यद्यपि दूसरे दिन उनको भाग जाने की इच्छा हुई लेकिन वे दृढ़प्रतिज्ञ हुए, अध्यवसाय किया और उन्हें जो लाभ मिले, उसके बारे में कभी स्वप्न में भी नहीं सोचा था। हर प्रातःकालीन वंदना में सयाजी ऊ बा खिन के प्रति उनकी गहरी कृतज्ञता प्रकट होती रहती है।

इसके बाद के वर्षों में श्री गोयन्काजी नियमितरूप से अंतर्राष्ट्रीय साधना केंद्र जाते रहे और परिवार के बहुत से सदस्यों को विपश्यना के शिविर में बैठाया। विपश्यना साधना के साथ-साथ वे अपने व्यवसाय का काम-काज भी देखते थे। लेकिन १९६३ में जीवन में एक नया मोड़ आया, जबकि नई स्थापित म्यंमा की मिलिट्री सरकार ने राष्ट्रीयकरण का प्रोग्राम आरंभ किया। एक ही रात में गोयन्काजी को उन उद्योग-धंधों से हाथ धोना पड़ा, जिन्हें उन्होंने स्थापित किया था तथा उस धन से भी जो उन्होंने कमाया था। उनका नाम

श्री गोयन्काजी रंगून के अंतर्राष्ट्रीय साधना केंद्र में सयाजी ऊ बा खिन को प्रणाम करते हुए

भी पूंजीपतियों की उस सूची में था, जिन्हें फांसी पर चढ़ाया जाना था। उस स्थिति को उन्होंने हँसते-हँसते स्वीकार किया। उनके उद्योग-धंधों में लगे मजदूरों को उन्होंने अपने देश की भलाई के लिए कठोर श्रम करने का आह्वान किया।

''यदि प्रकृति की यही इच्छा है तो मेरे शरीर का अणु-अणु इस पवित्र धरती के कण-कण में समा जाय। और यदि प्रकृति चाहती है कि मैं अधिक दिनों तक जीवित रहूं तो मेरे जीवन की प्रत्येक सांस मेरी मातृभूमि के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करने के लिए ही हो।'' (ये भाव उन्होंने अपने राजस्थानी दोहों में भी व्यक्त किये हैं।)

स्वर्णिम वर्ष

अंततः जीवन पर मँडराने वाला खतरा टल गया। अर्थात फांसी पर लटकाये जाने वाले लोगों की सूची से इनका नाम हटा लिया गया। श्री गोयन्काजी ने उस जीवन में प्रवेश किया, जिसे वे स्वर्णिम वर्ष कहते थे। काम-धंधे की जवाबदेहियों से मुक्त उन्होंने अपना ज्यादा से ज्यादा समय अपने प्रिय आचार्य के पास बैठ कर साधना करने में बिताना शुरू किया। वे उस धर्म में लीन हो गये जो वस्तुतः मुक्ति का मार्ग है। अपने लिए वे इससे अधिक कुछ नहीं चाहते थे। परंतु सयाजी ऊ बा खिन की योजना कुछ भिन्न थी। उन्हें प्राचीन काल की वह भविष्यवाणी याद आयी, जिसमें कहा गया था कि बुद्ध के २५०० वर्षों बाद उनकी शिक्षा बर्मा से भारत लौटेगी और फिर वहां से संपूर्ण विश्व में फैलेगी।

इस भविष्यवाणी को चरितार्थ करने के लिए ऊ बा खिन की हार्दिक इच्छा भारत जाकर बुद्ध की शिक्षा के सार 'विपश्यना' को उसकी जन्मभूमि में स्थापित करने की थी। परंतु दुर्भाग्यवश १९६० के दशक में म्यंमा सरकार अपने किसी नागरिक को सामान्यतः विदेश जाने की अनुमति नहीं देती थी। लेकिन श्री गोयन्काजी भारतीय मूल के थे, अतः इन्हें अनुमति दी जा सकती थी। ...

.... (*क्रमशः -- अगले अंक में*)

*('**विपस्सना न्यूजलेटर**', अंतर्राष्ट्रीय संस्करण; अक्टूबर २२, २०१३ से साभार, **अनुवाद**- विपश्यना विशोधन विन्यास, इगतपुरी). ---*

Registered No. NSK/235/2012-2014

WPP Postal License No. AR/Techno/WPP-05/2012-2014

विपश्यना विशोधन विन्यास, ग्लोबल पगोडा में पालि पाठ्यक्रम-२०१४

ग्लोबल पगोडा में आवासीय पाठ्यक्रम– पालि व्याकरण, सुत्त, सैद्धान्तिक विपश्यना इत्यादि। आवासीय पाठ्यक्रम (परियत्ति और पटिपत्ति):--

३० दिवसीय प्रारंभिक पालि-हिंदीः अवधि - २०-०१-२०१४ से २०-०२-१४ तक; फार्म जमा करने की अंतिम तिथि - १० जन्वरी २०१४;

९० दिवसीय पाठ्यक्रमः पालि-अंग्रेजी; अवधि - ०१-०६-२०१४ से ३०-८-१४ तक; (केवल **पुरुषों** के लिए) आवेदन पत्र जमा करने की अंतिम तिथि- ३० एप्रैल २०१४; **६० दिवसीय पाठ्यक्रमः पालि-अंग्रेजी; अवधि -** १०-१०-२०१४ से १०-१२-२०१४ तक; आवेदन पत्र जमा करने की अंतिम तिथि- १ सितंबर २०१४; **सबके लिए कंप्यूटर पर आवेदन पत्र --** www.vridhamma.org से भी भेज सकते हैं.

आवश्यक योग्यताएं:- वे साधक जिन्होंने -- १. कम से कम **तीन १०-दिवसीय** शिविर तथा **एक सतिपट्ठान**- शिविर किये हों।
२. एक वर्ष से नियमितरूप से दो घंटे की दैनिक साधना करते हों।
३. एक वर्ष से पंचशील का कड़ाई से पालन कर रहे हों।
४. कम से कम १२वीं कक्षा पास होने का प्रमाण-पत्र साथ हो।

संपर्कः विपश्यना विशोधन विन्यास (**V.R.I.**), ग्लोबल विपश्यना पगोडा, एस्सेल वर्ड के पास, बोरीवली (पश्चिम), मुंबई - ४०००९१. अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें– १) डॉ शारदा संघवी– फोन: (२३०९५४१३) ९२२३४६२८०५, **ईमेलः mumbai@vridhamma.org, director@vridhamma.org;** २) श्रीमती बलजीत लाम्बा: फोन: ०९८३३५१८९७९.

सयाजी ऊ बा खिन की पुण्यतिथि के अवसर पर पूज्य माताजी के सान्निध्य में एक दिवसीय महाशिविर

19 जनवरी, 2014, **रविवार**, **समयः** प्रातः **11** बजे से अपराह्न **4** बजे तक, **'ग्लोबल विपश्यना पगोडा'** में। **दिवंगत गुरुदेव के ३ बजे सुनाये जानेवाले रेकार्डेड प्रवचन में बिना साधना किये लोग भी बैठ सकते हैं।** कृपया निम्न फोन नंबरों या ईमेल से शीघ्र संपर्क करें। कृपया **बिना बुकिंग कराये न आएं।** बुकिंग संपर्कः फोन नं.: 022-28451170 / 022-33747501-Extn. 9, 022-33747543 / 33747544, **(फोन बुकिंग :** प्रातः **11** से सायं **5** तक, प्रतिदिन) **ईमेल Regn: oneday@globalpagoda.org**
Online Registration: www.oneday.globalpagoda.org

विपश्यना विशोधन विन्यास को मुंबई विश्वविद्यालय की मान्यता

मुंबई विश्वविद्यालय द्वारा विपश्यना विशोधन विन्यास को पालि में **एम. ए.** एवं **पी-एच. डी.** छात्रों को मार्गदर्शन करने के केन्द्र के रूप में मान्यता प्राप्त हो गयी है। शोध द्वारा पालि में एम. ए. तथा पी-एच. डी. करने के लिए योग्य छात्र **विपश्यना विशोधन विन्यास** (वी.आर.आई.), ग्लोबल विपश्यना पगोडा, मुंबई में आवेदन कर सकते हैं। इसके लिए संपर्क करें-- ईमेलः <s_sanghvi@hotmail.com>

आवश्यक सूचना-- धम्मगिरि पर **१४** और **१५ दिसंबर** को **ट्रस्टियों** एवं **धर्मसेवकों** की कार्यशाला होगी। इसके लिए पंजीयन (बुकिंग) आवश्यक है। केंद्र-आचार्यों से निवेदन है कि वे सब के नाम और अपने सुझाव निम्न ईमेल पर अवश्य भेजें-- serversworkshop@gmail.com

दोहे धर्म के

गुरुवर तेरे पुण्य का, कैसा प्रबल प्रताप।
जागा बोध अनित्य का, दूर हुए भव-ताप॥
धर्म दिया गुरुदेव ने, कैसा रतन अमोल।
मृत्युलोक के जीव को, अमृत का रस घोल॥
सद्गुरु की संगत मिली, मिला धर्म का सार।
जीवन सफल बना लिया, सिर का भार उतार॥
दुर्लभ सद्गुरु का मिलन, दुर्लभ धर्म मिलाप।
धर्म मिला सद्गुरु मिले, मिटे सभी संताप॥
धन्य! धन्य! गुरुदेव जी, धन्य! बुद्ध भगवान।
शुद्ध धर्म ऐसा दिया, होय जगत कल्याण॥

केमिटो टेक्नोलॉजीज (प्रा०) लिमिटेड
८, मोहता भवन, ई-मोजेस रोड, वरली, मुंबई- 400 018
फोन: 2493 8893, फैक्स: 2493 6166
Email: arun@chemito.net
की मंगल कामनाओं सहित

दूहा धरम रा

धरम दियो गुरुदेवजू, किसो'क अमित अमोल।
दुख स्यूं ब्याकुल जीव नै, दीन्यो इमरत घोळ॥
अहोभाग! गुरुदेवजू, प्रग्या दयी जगाय।
थोथै बाद-बिवाद रा, बंधन दिया छुड़ाय॥
गुरुवर दीनी साधना, चख्यो धरम रो स्वाद।
संगत सुखदा संत री, मन रो मिट्यो विसाद॥
पथ भूल्यो दिग्भ्रम हुयो, रह्यो हियो अकुळाय।
धन धन धन गुरुदेवजू! सतपथ दियो दिखाय॥
सतगुरु तो किरपा करी, दियो धरम रो नीर।
धोयां सरसी आप ही, अपणो मैलो चीर॥

मोरया ट्रेडिंग कंपनी
सर्वो स्टॉकिस्ट - इंडियन ऑईल, ७४, सुरेशदादा जैन शॉपिंग कॉम्प्लेक्स, एन.एच.६, अजिंठा चौक, जलगांव - ४२५ ००३, फोन. नं. ०२५७-२२१०३७२, २२१२८७७
मोबा.०९४२३१८७३०१, Email: morolium_jal@yahoo.co.in
की मंगल कामनाओं सहित

'विपश्यना विशोधन विन्यास' के लिए प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादकः राम प्रताप यादव, धम्मगिरि, इगतपुरी-422 403, दूरभाष : (02553) 244086, 244076.
मुद्रण स्थान : अक्षर चित्र प्रिंटिंग प्रेस, 69- बी रोड, सातपुर, नाशिक-422 007. **बुद्धवर्ष 2557, कार्तिक पूर्णिमा, 17 नवंबर, 2013**

वार्षिक शुल्क रु. **30/-,** US $ 10, **आजीवन शुल्क** रु. **500/-,** US $ 100. **'विपश्यना' रजि. नं. 19156/71. Registered No. NSK/235/2012-2014**

WPP Postal Licence No. AR/Techno/WPP-05/2012-2014
Posting day- **Purnima of Every Month,** Posted at **Igatpuri-422 403,** Dist. Nashik (M.S.)

If not delivered please return to:-

विपश्यना विशोधन विन्यास
धम्मगिरि, इगतपुरी - 422 403
जिला-नाशिक, महाराष्ट्र, भारत
फोन : (02553) 244076, 244086, 243712,
243238. **फैक्स :** (02553) 244176
Email: info@giri.dhamma.org
Website: www.vridhamma.org